

12154-116

विश्वनाथ

48.

काशी नरकाधि
27/3 I

ASHA ARCHIVES

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

रक्षचैत्यविधि

माह ॥ इधुसुतू नोचिय ॥ गुंला थोकपाइसुतू चालि
तत्रने चालियथाशकेश पूजायाय ॥ वलिपात १ दि
ततवसुंधाराधिवाशनं ॥ आचार्य नमवज्र करे ॥ ॐ
वृत्वा असोतरशनं जपत् १०८ मंत्रं ॐ वसुंधारे स्वा
हा ॥ ततः भावना ॥ इलं इलं इत्येतेन वज्रमय अमि वि
भाव्य ॥ ॐ मेदतिवर्जि भववज्रवंधवं इलं ॥ ॐ हनर
वज्रकोटं इलं ॥ ॐ आ इलं ॥ कमान्पूजाकारयत् ॥ अर्घ्यं
ॐ एह हि महादेवी पृथिवी लोकमातरे सचरन्मनुजं
पुण्यं दिव्यालंकारभूषितहारनौपूरं निर्नोद वज्रम
त्त्वप्रपूजित इदं अर्घ्यं गृह्णित्वा तु चैत्यवतं शुशोध्य
हि ही ही इलं स्वाहा ॥ मो कलूय ॥ यधमो अकार मूरवद
क्षणा कितने ॥ कुलिश लुतं मूले ॥ पूजाया यधन चा
चिय ॥ यात हस्त पूजायाय ॥ कुल लवहाय ॥ चालि
यके ॥ जजमानतं सिजलया शुवाश फयके ॥ पीठा

दियूजा मराडल थिले ॥ सांनने सवतनये ॥ चेतयूजा ददा
एविमर्जत वलि होले ये गुदीग संले नको दथु संनयेः
थिति चाकाय थास विधि ॥ ॥ थनं लिक्षम चो

चो ॥ ॥ स चानये ॥ देव थाय गु थात म केश पूजा यायः
विधि थं थनं लि थ कालि नं चारुय ह्यया न हस्त पूजा
यास्यं च न व ह्यय चारुय के ॥ पञ्च रत्न यं चामृत ॥
पंच गंध तिर्थ या लं च केश लय थिति नम्ये चारुय
के ह्यय धुस्यं लि थ कालि यात चाविय थ कालि नं श्री
गुरु भराड यात विय गुरु नं सोध नयाय ॥ मत्रा ॥ श्रीं
तमो भगवते वै नो चतु म केतुरा जाय न थाग ना
गार हं ने सम्य कं उ ठाया ॥ न यथा ॥ श्रीं सुस्मे रम म
य रमाने र दाने र अ पस्मारो य्य निरा लं वे निरा कृ ले
निर्वा ने य शो वति महाने जे म वं उ ठा विद्या ना विधि
ने स्वाहा ॥ धार २१ ॥ पंच पाहार पूजा धुन का व गुरु नं
चा थ कालि यात न व ह्यय ॥ थ कालि नं दे व था र ह्य

यानलवः॥ स्वस्तिवाकेन देवयानके॥ ५॥

श्रौं वसुदेवाहा॥ चाकाय॥ श्रौं वज्रोद्वायखाहा॥ च

पकोयाय॥ श्रौं अरजेविरजेखाहा॥ चिकनमथुने॥

श्रौं वज्रधातुगडेखाहा॥ थामाहुधने॥ श्रौं वज्रमूकः

नमाकोटयखाहा॥ चाचिने॥ श्रौं वज्रकर्तेश्वरय

खाहा॥ चानोकहाय॥ श्रौं धर्मधातुगडेखाहा॥ श्र

क्षेतनडुधने॥ श्रौं धर्मरुक्खाहा॥ पिकाय॥ श्रौं सुष

तिष्ठितवजेखाहा॥ आशतगतय॥ ॥ ॥

थनदेवपूजाविधित्थे॥ थनिरक्षचैत्यारमविधि॥

थनवापूजाविधि॥ रुपांक्षेयपूजाजोलनथाकारये

श्रीसूर्यार्घ्यगुरुमण्डलपंचगव्यैः सिरुलनयः समा

धिः केशः शम्भुनमनपूजाः देवपूजाविधित्थे॥ चा

क्रपूजाः मण्डलथिलैः कितितेः शम्भुनतयः चित्पूजा

दक्षणाः विजेशेनयालनयानके॥ थनित्वापूजाविधि

समाप्त॥ ॥ थनलिदेवव्रतयकेहेथुसुदम

बृहत्पत्रचोम्यं आसनतयडिह् कृतायत्तयत्तेव
हृषलेनस्य श्रीलक्ष्मै चैत्यदक्षदोचिते श्रयंयिते
विहिनंउयके मतद्वोयके ॥ पंचोपाहारपूजायाय
फकोओत्रवोने ॥ थनपाडुषुतूपूर्नाक्षेसग्वतमत
नामवय वलिपात १ जज्ञजोत्तनथा कलये ॥ लिचाय
गुरुमहत्त पंचगव्यसोधनमिरुतयमराडधिते
विशर्जन इनायपूजाद्वोय विसमाधिः केशाधिका
शन अग्निस्थापन अग्नाडुति ॥ विधिविधानथ्यं पू
जादेवपूजा देवना इति यधर्मोपर्यना ॥ थुतिधुन
कावलक्षे चैत्यदोशमखातनपाये थनसंक्षिप्रप
ष्टिस्थाकर्मनामकर्णनकचुदाकर्णस्मेनयायमा
ल थनवज्रतंलक्षे चैत्यधिस्य जाययाय ॥ मंत्र ॥
श्रौतमोमवेबुद्धबोधिमत्त श्रविस्वइंस्व थनधर्म
मूनिपानिकमाकराठतंनस्यंलक्षे चैत्यसंज्ञास्मरथा

नके॥ गुरुमराउ नद नके म पूजाविशर्जन लोहानि
रक्षापंचगव्ये वियलक्षे चै न्य पूजाया नके॥ धलि
बोछायके॥ रलमराउ वोयके॥ देवयान दो हलये॥ थ
नधर्म मूनिपनिसे तंताय अक्षत नो नकं ला हा हा
जोलपंचोने॥ सुनि॥ योउद्वलं नमामि उद्वनिधि
ज्ञानविश्वं वृद्धास्वयं उद्व आ उद्व बोध नार्थं मभ
यं नागादि देश कुवं॥ तस्मै ज्ञानकृपा शिष्य उधरय
कउष्टनां कुले कछि देना नादी गग्रहनाय भूलविम
तिषाकार भिं नो नम॥ स्नानया शल होले॥ थन किका
स्य हा थजोलपंचोने थन स्वकने॥ समत्वा हरं नुमा
दशगुदि शु सर्व उद्व बोधि सत्त्वस्य गुरत सर्वतथा
गत च कव नुस्तपय विश्व कुलो वस्थिता अ॥ देशि
व्यपति से तं रे कम त रे कचित्तया ना वजो जिगुदि
ग संविज्या ना व चो न पिं दशदि ग लोकया ल आदिं
समलं उद्व बोधि सत्त्व सत्त्वा गतया हे वने समलं

तथागतः वैलोचनः अक्षोभ्यः स्तनशम्भवः अमृता-
म्भः असोद्यमिद्धिः थामयोः लयंचतथागतयाः देवने
शिष्यपतिसेनं प्राधनायात् ॥ सर्वमूज
विद्यादेवताः अहं अमूकनामा दशकुदिक्षु अतिना
नागतपुत्रान्यत्रानां सर्ववृद्धबोधिसत्त्वानां ॥

हगुरुयनिगथे धालसामसलतथागत
नामविद्यायाः कर्मणुत्तुलिधर्मनियमित
नामहिधनावनीवनेवहलयात्रचोतः न्यदिगु
दगमंविन्यानां चोतः तथागतयाः केशरणावने ॥
हनेनाकालेवनावचोतगुखः हनेवयुगुलिखमि
मविन्याकलथधिलतथागतया आवकधर्मः
यागुकर्मतवधतपुन्ययाफलखव ॥ गुरुतेआज्ञा
दयकल ॥ पुन्यकवुडा आवकाभुन्यकतस्येपुपना
सर्वसत्त्वनिकार्यानाच ॥ सर्वपूज्यः मनुमोदयामि
विदरेनदशकुदिक्षु ॥ अवैवर्तिक ॥

हे शिष्य यन्निगथे गधालसा श्री ३ लक्ष चैत्य उच्यते.
यान् दुयात उच्यते यान् धालसा समसम यानिया.
न उद्धारयाये अर्थं न मनुष्य यन्नि संसार उद्धारयाय
यान्. हे शिष्य यन्नि शुगुलि धर्मो यो जिव दनो ले म
स सर्वदा कालं ह्यपनि स्य नं धर लपि. शुगुलि धर्म या
फलं न समसम या यमो च न जुय ॥ धर्म च कय वन ना
य. दश मुदिक्षु सर्व बुद्धा नं ॥ भगवतो यन्नि निर्वात
कामनाः यो चो र्यरि निर्वाय. धारयदि सं धर्म ॥
हे शिष्य यन्नि शुगुलि धर्म या गुपुं न्य या फल गथो.
धालसा. फिगुदि गमं विज्या ना व चो न यन्नि तथा ग
न यन्नि मे नं लक्ष चैत्य या धर्म या गुख जक. क ना व.
विज्या न. हनं थोल चैत्य या गुं न्य या फल. थो फिगुदि
गमं विज्या ना व चो न तथा गन यन्नि मे नं उलि थुति पुं
न्य उध क सथा क ने म फ. असं य पू न्य फल ध क. थ
गु धर्म पु न्य या फल ज न मान यन्नि कल समसम ला.
क जु याय ॥

यन अर्थ या ये शा दुडु नाय अ धार

कोत्वा ननस्येवा के ॥ श्रीं सर २ मिदि २ क २

यं च २ हर २ हिरि २ ई २ धर २ धिरि २ उर २ तर २ नि

२ वर २ रमिन मन सह अयति मणि ३ ने ॥ नय

॥ मो वृद्धाय क रुणा व भा मित हृदय य यरा

॥ च न य वै धातु क मनु नरा य म वे म त्वा नं भु

॥ ह न्या दिव्य गंध र सो य ता उ प भु ज्ये मा म

॥ नू नरा य मं स्य क्तं वो धै यति ता य ना य मु ग

॥ रौ यो हो ॥ य न य ते न्या दि ॥ न स्मै रक्षे चै न्यः

भक्ता रका य अर्थ यति ह्वा हा ॥ मु ति ॥ न म स्ते स म ह्

या नां जि न धातु क र द क म वे वृ द्वा ल यं चै न्य ध र्म धा तु

न म लु ते ॥ थ न व लि वि य ॥ न म लु ते य दि का नां स वे

न था ग ना नां वा पि ध र्मा नां वा पि ध र्म नां व लि तां अं

अ अ स म स म स ता वा पि सा म ति हर २ स वि त्त रा ग

उ द्ध ध र्म र ते स र २ स्म र २ स म व लो ह स २ व य ग ग रा

म हा व ल र क्ष २ शो जो ल २ न मा ग रे स्वा हा ॥ थ न स ता

क्षे र मं ड ल दे व वि स र्ज न या त के ॥ थ त २ ल क्ष चै न्य

इसंनयावयूजायातके॥थनलक्षचैत्यपंचमुत्रका
नंकेनकंप्रतिष्ठायाये॥गुरुतंवनुतायअक्षतस्वा
नमालापंचतृत्रकागवदाजोनकंजायमंत्र॥वंमणि
मतप्रेजोल२धर्मधातुगर्भेखाहा॥धा१०८खान
मालानकोषायकेतायंलुयवजुनधीय॥थनपरि
क्रमनंभावतास्वातसेलक्षचैतेदेवताविधित्येपू
जा॥थनदेवताहुति॥**त्यादि॥**थनजापनंमंत्र॥ओं
नमः॥सर्ववृद्धवोधिसत्त्वआ॥विद्युदंरं॥य

अकालमृत्यु थनमहत्वाहुतियाये थनदेवा
लिविय थनमिष्याधिवामन लोहगिरक्षा म्ये
खाहुति मीषाधिवामन सिफेल्य मराउल
थिले सकलसेनंकिम्बस्वाननने पूर्णायाये
सेनाक्षेरक्षमापुत आसिरवादमराउलविमजुन
थनधर्ममूर्तिसेनंकिम्बजोनत्रिपुदक्षनायायेबाके
ओंआकाशधातुभवयवादनथागतहृद्यतथेवग

इदं न तत्र कथयति सत्पक्ष मत्तु
पुनश्च पुराचि जादेशो मविकरुवय न भ्यातावे अ
प्रशत्रुने फलतिनमय मनोरथार्थ मये
वज्रिवमार स्नान जाकि देव स्वे रेले ॥
न न न दक्ष नावजा चार्य पूजा वाधा नि
मिहलंति के चुमिह नये शेषा दुवि
नियति सेन देव थिय कतय वाके
मत्तु श्री शाके सिंह न थागत स्य बुद्ध क्षत्रे भ
इकल्ये वैव श्रुत म न न रे हि म वत्त य वत्त रा ग्ये दक्षी
नया र्थे भद्र वाडे कली पुगे जा बुद्धी ये वा सु सि क्षत्रे
आर्या वर्त पुं न्य भुमौ भागे न याल दे शे उ य ह्द दोषी
हे हे रु क श्री विरुया क्षर व गान नां मि धि वा मि ने श्री
स्वयं भु चै न्य स त्रि धान्य वाग म न्या म श्रि म कृ ले
कृशा व न्या पुर्व कृ ले म स न या उ त्र कृ ले इहै व न ग
रे भ रोग दे वा ल य स्थाने अ य त्या दि दान य न्या दि

नमो भगवते वासुदेवाय जन्तुधत्तमन्तानकात्मना
मगवान् श्रीशुकलक्ष्मैतयभक्तारकस्यजजमान
मेयथास्त्रोक्तफलमयद त्रैआहुराकात्मना
गर्भेस्वाहा धोचके धतकेशमण्डलपात्र
ह्राये देवचुयेकलवनेथासनागयना
ने तिर्थसलक्ष्मैतयदोचिनेननिवस
किदलर्पुत्रिर्नोलनागपद्वनयस्वा
नसंभावना कृत्तिनीसुन्यतातरविस्वा मोज
कायांमध्यवज्रवरुनवज्रं पूर्वअनन्तनिल दक्षिण
पश्चिम पश्चिमेतक्षेक उन्नेवातसुकि ईशाणो म
हापद्मे अग्नेशं सपात नैऋत्यकर्कोटक वायुवे
कृतिक वाहिश्वसर्वनागानांविचित्रं धृष पचोप
चारयूजा पूष्यनाम वं वज्रवरुनायस्वाहा ओंअ
नन्तायस्वाहा ओंपद्मायस्वाहा ओंनरुकायस्वा

वायुकिंयस्वाहा ओं वायुयाताय स्वाहा
वायुस्वाहा ओं कलिकायस्वाहा आमहाय
स्वाहा येनोपचारपुत्रा अर्घ्याये लुलदि
स्वाहा अक्षत द्वाफोलस्वाहा नमोऽस्तुते
नमोऽस्तुते वायुकिंक्षते क कर्कोतकयप्रमहा
स्वाहा यान् कलिकवरुणायातदेवति महा
स्वाहा ममिषि उगधरभयरातडुरु नन्दो
स्वाहा महासागरं नवनप्र महातप्र
स्वाहा महाकान्तिसुरूपमहासुरूप भद्रोदिकम
स्वाहा शिरिः महाशिरिः आगच्छागच्छ महातागा
धिपतिः सुमेव दानेन्यादिपुष्पस्वाहा धनकि
नने सुनि ओं सुषिन्नो कधातो चैत्यकं वर्तितम
स्वाहा मिथ्यानामनुकं पायदेवतापुजयामे हे कृन्वान
मोदतामैव कैत्य यतिह सुव्रततागाधिपति चिरंती
स्वाहा शासनत्वं पशादत ओं धिरिः रुंजस्वाहा शता

अनेनयवायन त्रियदक्षनाया
थननिलप्रत्यनि क्षमक्रमारिपूजा फलाद
मयाचक्र कौलामग्वनविय गनचक्र उक्ति
यवनि मिधयामम्यन् ईतिलक्षचैत्य
५ ॥ ॥

शी ४

अंनमावृक्षाय ॥ अंनमाधर्माय ॥

अंनमःसंघाय ॥

सर्वस्मुरत्तनगजिन्दुवरनलंबोदरे शुंदपुष्प
उत्तावराहित्वरित्वकराशिधूस भास्कर वेद्य
भवत्पिकीर्तीरवाले भोग पुण्यावकपा
लः लोकदकस्यानरुत मालरागाहार
वीराल १

नृणां श्रीगुरुभास्करादिपुजाभः संकल्प
यासादिया लखशोधनगुरुमण्डलादि
जलिबी. क्षापय्यगर्वविये ॥ सिम्भूरतयः
मण्डलादिसमाधि कलशादिघोषिदक
चाकपूजाम् संगीछायचित्तपूजादेराज
कार्यलिविजम् ॥ १ ॥ ७ ॥ ७ ॥

भास्करार्घ्यपुजाभः

नमामिवज्रवागहि सर्वपापप्रमूचनिमालविश्वं
सगिदेवि वृद्धत्वं फलदायनिः शुभम् १

॥ ईश्वरस्य विविध साह ॥

श्रीमद्भक्तिकवि	२११३	I
-----------------	------	---

ASHA ARCHIVES

ॐ